ISSN: 3048-9423(Online)
Naveen International Journal of Multidisciplinary Sciences (NIJMS)
© NIJMS | Vol. 1 | Issue 2 | October-November 2024
Available online at: https://nijms.com/

हिंदी सिनेमा में तंत्रवाद्यों का योगदान

आभा श्री [1] एवं प्रो · संध्या रानी शाक्य [2]

[1]शोध छात्रा , संगीत विभाग , रानी अवंतीबाई लोधी महिला महाविद्यालय, बरेली
[2]प्राचार्या, रानी अवंती बाई लोधी महिला महाविद्यालय, बरेली
[1]**Corresponding Author Email**: shri.aabha17@gmail.com
[2]**Co-Author Email:** sandhyajagdish5@gmail.com

सारांश:

भारतीय सिनेमा, कला और संस्कृति का अद्भुत मेल है, जिसकी शुरुआत 1913 में दादा साहब फाल्के की फिल्म "राजा हरिश्चंद्र" से हुई। भारतीय फिल्मों का सबसे खास हिस्सा उनका संगीत है, जो न केवल मनोरंजन करता है बल्कि दर्शकों को भावनात्मक रूप से जोड़ने में भी मदद करता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत, जैसे हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत, ने फिल्मी गानों की नींव रखी और इन्हें गहराई और अलग पहचान दी। फिल्मी संगीत में तंत्र वाद्यों, जैसे सितार, सरोद, सारंगी, संतूर और गिटार का बड़ा योगदान है। इन वाद्यों ने न केवल गानों को खूबसूरत बनाया, बल्कि फिल्मों की भावनाओं को भी उभारा। "मुगल-ए-आज़म", "पाकीज़ा" और "कश्मीर की कली" जैसी फिल्मों में इन वाद्यों का बेहतरीन इस्तेमाल हुआ। सारंगी और सरोद जैसे वाद्यों ने प्रेम, उदासी और आध्यात्मिकता जैसी भावनाओं को गहराई से व्यक्त किया। वहीं, संतूर का उपयोग पारंपरिक और पहाड़ी धुनों में किया गया, जिससे फिल्मों में भारतीयता झलकी। तंत्र वाद्य सिर्फ गानों में ही नहीं, बल्कि बैकग्राउंड संगीत में भी अहम भूमिका निभाते हैं। इनके इस्तेमाल से दृश्यों की भावनात्मक गहराई बढ़ती है। उदाहरण के लिए, रोमांटिक और भावुक दृश्यों में सितार और सारंगी की ध्वनि दर्शकों पर गहरा प्रभाव छोड़ती है। इन वाद्यों की खासियत यह है कि ये भारतीय फिल्मों की सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करते हैं। तंत्र वाद्य हमारी परंपरा और सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा हैं, और इनका इस्तेमाल फिल्मों को और भी खास बनाता है।

इस प्रकार, तंत्र वाद्य भारतीय सिनेमा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इन्होंने सिर्फ संगीत को समृद्ध नहीं किया, बल्कि फिल्मों की कहानी और भावनाओं को भी गहराई दी है। तंत्र वाद्यों के बिना भारतीय सिनेमा अधूरा लगता है। ये वाद्य दर्शकों को गानों और दृश्यों से जोड़ने में मदद करते हैं और भारतीय सिनेमा को एक खास पहचान देते हैं।

सूचक शब्द : भारतीय सिनेमा, फिल्मी संगीत, तंत्र वाद्य, पारंपरिक एवं आधुनिक संगीत, सरोद और सितार।

परिचय

जो मनुष्य साहित्य,संगीत व कला से विहिन है, वे पूंछ और सींग विहीन पशु ही है। सही मायनों में भारत कलाओं की जननी है और सिनेमा कला का एक ऐसा माध्यम है जो कई बार बनता और बिगड़ता रहता है।

"साहित्य-संगीत-कलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः"

आचार्य भर्तृहरि

अर्थात-

इसकी खास बात यह है कि यह एक व्यक्ति द्वारा सृजित नहीं होता बल्कि इसमें पूरा एक समूह कार्य करता है समूह में प्रत्येक सदस्य के पास अपना अपना कार्य आवंटित होता है। भारतीय सिनेमा की बुनियाद 1913 में दादा साहब फाल्के द्वारा निर्देशित फिल्म "राजा हरिश्चंद्र"से रखी गई यह एक मुक फिल्म होने के बाद भी लोगों में खूब प्रचलित हुई, लोगों द्वारा इसे पर्दे पर जादू की तरह देखा गया। राजा हरिश्चंद्र के पश्चात 1919 में "कालिया मर्दन" ,1920 में "श्री पुण्डलिक" , 1925 में "दी लाइट ऑफ एशिया" आदि कुछ एक और फिल्में रही पर अब लोगों के बीच उतनी ज्यादा रोचकता नहीं रही थी, क्योंकि उनकी प्राथमिकता थोड़ी परिवर्तित हो गई थी।

इसी बीच आर्देशिर ईरानी द्वारा 1931 में पहली बोलती फिल्म "आलम आरा" को प्रदर्शित किया गया जो "राजा हरिश्चंद्र" के बाद लोगों के मध्य दूसरा जादू था।

"आलम आरा" में लगभग 7 गाने थे और इसी फिल्म का एक गीत 'दे दे खुदा के नाम पे…' भारतीय सिनेमा जगत का पहला गाना माना जाता है। जिसे "वजीर मोहम्मद खान साहब" ने गाया था।

भारतीय शास्त्रीय संगीत और फिल्म संगीत

भारतीय शास्त्रीय संगीत दो मुख्य धाराओं में विभक्त है

1.हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत

2.कर्नाटक शास्त्रीय संगीत

दोनों ही शैलियों की अपनी अलग परंपरा और विशेषताएँ हैं, लेकिन उनकी जड़ें समान हैं और दोनों ही धारा वेदों तथा अन्य प्राचीन ग्रंथों और साहित्यो से प्रेरित हैं।

शास्त्रीय संगीत- उत्तरी भारत में विकसित शास्त्रीय संगीत के अंतर्गत ध्रुपद, खयाल, ठुमरी, टप्पा, तराना आदि शैलियों का प्रयोग किया जाता हैं। इसमें राग और ताल का विशेष महत्व होता है। राग एक विशेष धुन है, जो निश्चित स्वरों का प्रयोग करके निर्मित की जाती है, तथा उसे समय विशेष या मौसम के अनुसार गाया-बजाया जाता है। ताल समय की इकाई होती है, जिसमें बीट्स का क्रमबद्ध संगठन होता है।

फिल्म संगीत- फिल्मी संगीत को सिनेमा का एक अहम हिस्सा कहा जा सकता है, यह फिल्मों में गायन और नृत्य का माध्यम होता है। यहां गायकी और गायन को ज्यादा प्रधानता दी जाती है, इसकी प्रवृत्ति थोड़ी चंचल मानी जाती है, शास्त्रीय संगीत की भांति यह राग और ताल में बध्द नहीं होता है अपितु यह स्वतंत्र होता है। फिल्मी संगीत के प्रारंभिक काल में भारतीय शास्त्रीय संगीत अर्थात कर्नाटक संगीत , हिंदुस्तानी संगीत और लोक संगीत का प्रयोग होता था , बाद में फिल्मी संगीत में पश्चिमी तत्वों का भी प्रयोग बढ़ गया तथा अब कभी-कभी फ्यूजन शैलियों का भी इस्तेमाल होता है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत व फिल्मी गीत- संगीत दोनों ही संगीत के महत्वपूर्ण अंगों को परिलक्षित करते हैं। शास्त्रीय संगीत को फिल्म संगीत की एक मजबूत कड़ी मानी जाती है। राग व ताल का सही संयोजन एक गीत को पूर्णता प्रदान करती है, परंतु फिल्मी गीतों को समृद्धता प्रदान कराने में सबसे अहम भूमिका वाद्य यंत्रों की रही है। प्रारंभ से ही सिनेमा में क्लासिकल गीतों में देसी वाद्य यंत्रों का प्रयोग प्रचलन में रहा है। जिसमें सरोद, सारंगी,ढोल, डफली,तबला, ढोलक आदि का प्रयोग गीतो को सुशोभित करता रहा है।

भारतीय सिनेमा में तंत्रवाद्य का प्रयोग

सर्वप्रथम यह जानना आवश्यक होगा कि तंत्रवाद्य क्या है? तो… तारों के कंपन से ध्वनि उत्पन्न करने वाले सभी वाद्य यंत्र तंत्र वाद्य की श्रेणी में आते हैं, जिसमें सारंगी, सितार, सरोद, संतूर,वीणा, गिटार और बैंजो जैसे वाद्य यंत्र सम्मिलित है। हिंदी सिनेमा में भी इन वाद्य यंत्रों ने अद्वितीय संगीत प्रदान की है, कुछ समय में ही शास्त्रीय संगीत के ज्ञाताओं द्वारा फिल्मी जगत में संगीत की एक सुंदर छवि प्रस्तुत करना प्रारंभ कर दिया गया था।

संगीतकार "मदन मोहन" की अधिकांश रचनाओं में उनके गीतों में "उस्ताद रईस खान" ने अपना सितार बजाया, फिल्म "दुल्हन एक रात की" की एक गीत "मैं रंग ली आज चुनरिया…" मैं इनके द्वारा अर्थात उस्ताद रईस खान द्वारा सितार का बेहतरीन प्रयोग किया गया था।

आजादी के उपरांत "गुलाम हैदर" ,"जी.एम.चिश्ती" और "पंडित अमरनाथ जी" जैसे संगीतकारों द्वारा ढोलक वह गिटार की खूबसूरत संगत देखने को मिला, 40 से 50 का दशक हिंदी सिनेमा के संगीत का स्वर्णिम काल कहा जाता है। 1963 के आसपास की फिल्मों में सारंगी व सितार की सुंदर प्रस्तुतियां मिलती हैं। 1963 में आई फिल्म "ताजमहल" में "पांव छू लेने दो फूलों को इनायत होगी", "जो बात तुझ में है तेरी तस्वीर में नहीं…"आदि कई संगीतबद्ध रचनाओं में सारंगी का विशिष्ट स्थान दिखता है। दिलीप कुमार की कई फिल्मों में "नौशाद साहब" ने अपनी सुंदर सारंगी की प्रस्तुति दी है, "दो हंसों का जोड़ा बिछड़ गयो रे" , "गजब भयो रामा…" , "नैन लड़ जइहै है , तो मनवा मा…"

उस समय सारंगी का दूसरा सबसे प्रचलित नाम "उस्ताद सुल्तान खान" का था, उस समय की प्रचलित फिल्में "उमराव जान" तथा "कश्मीर की काली" जैसे फिल्मी संगीत में सारंगी का प्रयोग किया गया था।

1958 में उस्ताद रईस खान ने फिल्म "अदालत" के एक गीत "यूं हसरतों के दाग मोहब्बत में धो लिए" में सारंगी के साथ ही सितार वाद्य का भी एक सुंदर प्रयोग सुनने को मिलता है, इसी कड़ी में 1935 में फिल्म "देवदास" में "तिमिर वरुण" द्वारा सरोद का प्रयोग देखने मिला इसके बाद तो सरोद का जैसे एक दौर सा रहा 1952 से 1979 तक के फिल्मों में सबसे प्रचलित वाद्य बनाकर प्रचलन में रहा।

फिल्म आंधियां, तलाश, सीमा, आम्रपाली, मैं तुलसी तेरे आंगन की, नवरंग, रत्नदीप आदि जैसे कई नए पुराने गीतों में कई सुप्रसिद्ध कलाकारों की संगत में सरोद का एक सुंदर चित्रण किया गया।

पर्दे के पीछे से अपने संगीत द्वारा लोगों को मोहित करने के साथ-साथ ही हेमंत गुप्ता की देव आनंद और गीता बाली अभिनीत फिल्म "फेरी" में सरोद की प्रस्तुति पर्दे पर भी देखने को मिला। इसी समय काल में ही "निखिल बनर्जी" वह "अकबर खान" द्वारा सितार व सरोद की सुंदर जुगलबंदी मिलती है। तंत्र वाद्यों का ऐसा जादू रहा कि कई बार फिल्में तो अपना जादू पर्दे पर नहीं बिखेर पाई परंतु उनका संगीत खूब पसंद किया गया। उनमें से ही एक है "बासु चटर्जी" की फिल्म "रत्नदीप" जो दर्शकों के मध्य कोई खास करिश्मा नहीं कर पाई पर इसी फिल्म का एक गीत "६कभी-कभी सपना लगता है कभी यह अपना लगता है" में "राहुल देव बर्मन द्वारा सरोद का प्रयोग खूब पसंद किया गया।

तंत्र वाद्यों का हिंदी सिनेमा में योगदान

सांस्कृतिक पहचान- तंत्र वाद्य भारतीय सांस्कृतिक व पारंपरिक वाद्यो में से एक है, इसका अस्तित्व वैदिक काल से ही देखने को मिलता है। हिंदी फिल्मों में इन वादियों का प्रयोग भारतीयता के स्वरूप को प्रकट करने के लिए किया जाता है तथा इन वादियों के कुशल प्रयोग के फल स्वरुप गानों में भारतीयता की झलक मिलती है।

पार्श्व संगीत में तंत्र वाद्यो का प्रयोग- तंत्र वाद्यों का प्रयोग कई बार किसी सीन के बैकग्राउंड में किया जाता है, किन्ही भावों को और भी ज्यादा प्रभावशाली बनाने के लिए। रहस्यमय, भावुक या गहरे भावों वाले दृश्य में इन वाद्यों का प्रयोग किया जाता है। जैसे शोले के एक दृश्य में गिटार का संगीत कहानी को और अधिक रोमांचक बना देता है। भावनाओं की अभिव्यक्ति- तंत्र वाद्यों में विशेष कर सितार व सरोद जैसे वाद्यों का प्रयोग मुख्यतः भावनात्मक दृश्यों में किया जाता है। इन वाद्यों की ध्वनि में संवेदनशीलता होती है जो प्रेम, उदासी,आध्यात्मिक जैसे जटिल भावों को अभिव्यक्त करने में सहायक होती है। 1960 वह 70 के दशक के फिल्मों में जैसे मुग़ल-ए-आज़म, पाकीजा आदि में सितार व वीणा का उपयोग करके संगीत को पारंपरिक और शाही रंग दिया गया।

प्रमुख तंत्र वाद्य

1. सितार- शास्त्रीय संगीत का प्रमुख वाद्य, जिसका प्रयोग फिल्मी गीतों में भी खूब हुआ है। "मुग़ल-इ-आज़म","अनुराधा", "गाइड","मेरे महबूब" आदि।
2. सरोद- सरोद का प्रयोग भावुक ध्वनि उत्पन्न करने के लिए किया जाता है, जो फिल्मी संगीत में गहरे भावनात्मक दृश्यों में सुना जाता है।
3. गिटार- फिल्मी संगीत में इसका व्यापक उपयोग होता है, खासकर रोमांटिक और पॉप-प्रेरित गीतों में।
4. वायलिन- वायलिन को मुख्यतः भावुक और नाटकीय दृश्यों में इस्तेमाल किया जाता है। वायलिन समूह अक्सर फिल्मी संगीत में रोमांस और उदासी का माहौल बनाने में सहायक होते हैं।
5. संतूर- इसका उपयोग फिल्मी गीतों में हल्के और मधुर संगीत प्रभाव के लिए होता है, खासकर पहाड़ी या लोक गीतों में। जैसे फिल्म "कश्मीर की कली" ,"सिलसिला","रुदाली","हम दिल दे चुके सनम", "जब वी मेट" आदि फिल्मों में संतूर का सुंदर प्रयोग देखने को मिलता है।

तंत्र वाद्यों के बिना हिंदी सिनेमा का संगीत अधूरा है, और इनका महत्व पीढ़ियों से कायम है। तंत्रवाद्यों का महत्व उनकी शक्ति में है जो भावनाओं को व्यक्त करने से होती है। तंत्र वाद्यों द्वारा व्यक्ति के गहन आत्मा को उत्तेजित किया जा सकता है ,यह दर्शकों को गहराई में ले जा सकता है तंत्र वाद्य ने केवल संगीत को बढ़ावा नहीं दिया बल्कि फिल्म के कहानी और वातावरण को भी विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

तंत्र वाद्य फिल्मी संगीत में एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं। इन वाद्यों की ध्वनि न केवल फिल्मी गीतों को संगीतमय बनाती है, बल्कि उन्हें अधिक भावपूर्ण और आकर्षक भी बनाती है। तंत्र वाद्यों के बिना फिल्मी संगीत की कल्पना अधूरी होगी, क्योंकि ये वाद्य श्रोताओं को गहरे भावनात्मक अनुभवों से जोड़ते हैं और संगीत को जीवंत बनाते हैं।

इस प्रकार हिंदी सिनेमा में तंत्र वाद्यों का महत्व न केवल संगीत के क्षेत्र में है बल्कि एक कला के अंग के रूप में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं इसके माध्यम से फिल्मों की भावनाओं को गहराया जा सकता है और दर्शकों को एक अद्वितीय और सांस्कृतिक अनुभव प्रदान किया जा सकता है।

References:

[1] **मिश्र, लालमणि.**(2002), **भारतीय संगीत वाद्य** (दूसरा संस्करण). **भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली ।**

[2] **शास्त्री,राकेश.**(2003).**श्रीभर्तृहरिविरचितम् नीतिशतकम्(तीसरा** संस्करण).**परिमल पब्लिकेशन दिल्ली ।**

[3] **राजन, रेनू** (2021). **भारतीय शास्त्रीय संगीत के विविध आयाम. अंकित पब्लिकेशन, दिल्ली ।**

[4] **शर्मा, मृत्युंजय. (**2001).**संगीत मैनुअल**

[5] **वक्सन्त, संगीत विशारद संगीत कार्यालय, हाथरस।**

[6] **श्रीवास्तव, श्री हरीश चन्द्र, राग परिचय सभी भाग संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद ।**

[7] वसन्त, संगीत विशारद संगीत कार्यालय, हाथरस ।

[8] परांजपे, श्रीधर, संगीत बोध।

[9] गोवर्धन, श्रीमती शान्ति, संग्रीत शास्त्र दर्षण।

[10] चन्द्र, राय, (भाग-742) संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद ।

Cite this Article:

आभा श्री [1] एवं प्रो संध्या रानी शाक्य [2], "हिंदी सिनेमा में तंत्रवाद्यों का योगदान", Naveen International Journal of Multidisciplinary Sciences (NIJMS), ISSN: 3048-9423 (Online), Volume 1, Issue 2, pp. 42-45, October-November 2024.

Journal URL: https://nijms.com/

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.